बचिये शब्दों की मार से

अशोक मानव

शब्द के कारण मानव जीवन प्रकृति में विशेष प्राणी माना जाता है। मधुर शब्द व्यक्ति को सर्वोच्च शिखर पर ले जाता है और शब्द नकारात्मक प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति अप्रिय को अपमानित भी करता है। शब्द की यह व्यवहारिक व्याख्या है पर शब्द की वास्तविक परिभाषा यह है कि व्यक्ति जैसे विचार बनाता है वैसे शब्द उसके शरीर से निकलने लगते हैं। जैसे–सुगन्धित पौधे का गुण है खुशबू बिखेरना। वर्तमान समय में मानव समाज शब्दों का पुजारी है। धार्मिक ग्रन्थ में आदर्श शब्द मिलते हैं। ये ग्रन्थ पारिवारिक जीवन जीने की कला बताते हैं। ज्ञान की बात ये ग्रन्थ नहीं करते हैं। ग्रन्थों के नायकों ने जिस तरह अपने हथियार, यंत्र और ज्ञान का विकास किया उसकी व्याख्या नहीं मिलती है। ये ग्रन्थ बताते हैं कि एक समय का विज्ञान आगे था पर इसकी संरचना कैसे होती थी इसकी चर्चा नहीं मिलती है। जब ये लोग मानव समाज का निर्माण करने के लिए पैदा हुए थे तो प्रकृति की रहस्यात्मक घटनाओं की जानकारी का वर्णन करना चाहिए या जिससे आने वाले समाज बुराइयों से दूर रखने के लिए इसका प्रयोग करता और समाज इस ज्ञान से अपनी रक्षा करता। इसे आप खुद खोजें क्या इसमें कोई संकीर्णता है? वर्तमान समय में मानव समाज अपनी खोज में इतना धनी हो गया है कि जिस विज्ञान का विकास करता है उसका लिखित ज्ञान से सुरक्षा कर सके। वर्तमान समय में परिवारवाद, सम्बन्धवाद, समाजवाद, समाज की बुराई का कारण बन गया। अधिकांश लोग यही चाहते हैं कि हर फायदा खुद लूँ या अपने सम्बन्धी को दूँ। आज भी हर व्यक्ति अपने परिवार और मान सम्मान के लिए लड़ता है। खुद साधन सुलभ होना चाहता है और लोगों के साधना का ध्यान नहीं रखता जो समाज की बुराई बन गयी है। इसी कारण समाज को सही न्याय नहीं मिल पा रहा है। वर्तमान समय में हर व्यक्ति चालाकी पूर्ण शब्द का प्रयोग करता है वह जिसके लिए जैसा चाहता है वैसा बोलता है। यदि एक छोटा कण गिरता है तो प्रकृति की घटना में उसका प्रभाव पड़ता है। फिर सबसे शक्तिशाली ऊर्जा मानव समाज ने ली है तो इसके सोचने बोलने का प्रभाव प्रकृति पर क्यों नहीं पड़ेगा। इस विषय पर मान समाज को गम्भीरता से विचार करना चाहिए उसके बाद अपना भविष्य स्वयं तय करना चाहिए।

प्रकृति में असंख्य जीवाणु बनते–बिगड़ते हैं यह क्रिया शरीर में भी होती है। जब व्यक्ति कुछ बोलता है तो उसका शब्द जिसके लिए बोला जाता है उसके ऊपर प्रक्रिया करता है उसके विचार शब्द के अनुसार भावना बदल देते हैं और जैसा व्यक्ति सोचता है उसी तरह की ऊर्जा उसके शरीर से निकल जाती है जिसके लिए यह ऊर्जा निकाली जाती है उसके अन्दर ऐसे जीवाणु पैदा हो जाते हैं जो वैसी क्रिया करने लगते हैं। शब्द बोलने के पीछे उसकी इच्छाशक्ति जुड़ी होती है जो उत्तेजना पैदा करती है और यही

"हर व्यक्ति अपना गुरू स्वयं है। सबसे बड़ा न्यायी उसका 'मन' होता है, जो हर क्रिया का सत्य–असत्य बताता है, उसी से पूछकर हर विषय का निर्णय लेना चाहिए। अन्य व्यक्ति आप को सलाह आपके हित को नहीं बल्कि हो सकता है अपने हित को देखते हुए दे।"